

डॉ. गैरी येट्स, जेरेमिया, व्याख्यान 15, जेरेमिया 11-20, कन्फ़ेशनस, भाग 2, द पाथोस ऑफ़ गॉड

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पढ़ा रहे हैं। यह सत्र 15 है, जेरेमिया कन्फ़ेशनस, भाग 2, द पाथोस ऑफ़ गॉड।

अब हमारा सत्र यिर्मयाह 11 से 20 में यिर्मयाह की स्वीकारोक्ति पर दूसरी नज़र है।

इस पाठ में मैं जो करना चाहता हूँ, हमने पिछले पाठ में देखा कि कैसे ये स्वीकारोक्ति परमेश्वर के साथ यिर्मयाह के व्यक्तिगत संबंध की अभिव्यक्ति है, लेकिन इस सत्र में मैं जो देखना चाहता हूँ वो ये है कि ये स्वीकारोक्ति वास्तव में इस्राएल और यहूदा के लोगों के लिए टूटी हुई वाचा के बारे में एक संदेश है। और इसलिए, एक अर्थ में, यिर्मयाह की प्रार्थनाएँ उनके द्वारा दिए गए उपदेशों की तरह ही परमेश्वर के साथ उनकी टूटी हुई वाचा और उनके द्वारा अनुभव की गई परिस्थितियों का एक बयान बन जाती हैं। इसलिए हमें इन स्वीकारोक्ति या इन विलापों को परमेश्वर और इस्राएल के बीच टूटी हुई वाचा के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है जो यिर्मयाह 11 से 20 की पृष्ठभूमि में है। याद रखें, यह खंड यिर्मयाह अध्याय 11 में एक उपदेश से शुरू होता है जहाँ प्रभु मूल रूप से यहूदा पर वाचा के प्रति विश्वासघात का आरोप लगा रहे हैं और उन्हें याद दिला रहे हैं कि उनके खिलाफ वाचा के श्राप लाने की प्रक्रिया में वे लगे हुए हैं और अभी भी लगे हुए हैं।

प्रभु इस विशेष उपदेश में कहते हैं, यिर्मयाह अध्याय 11, श्लोक 10, वे अन्य देवताओं की सेवा करने के लिए उनके पीछे चले गए हैं। इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने ने मेरी वाचा को तोड़ दिया है जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ की थी। यह आरोप है।

उन्होंने वाचा तोड़ी है। वे दोषी हैं। इसलिए, यहाँ न्याय की घोषणा आती है।

प्रभु यहोवा यों कहता है, देखो, मैं उन पर ऐसी विपत्ति लाने जा रहा हूँ जिससे वे बच नहीं सकते। चाहे वे मेरी दुहाई दें, मैं उनकी नहीं सुनूँगा। तब यहूदा के नगर और यरूशलेम के निवासी बाहर निकलकर उन देवताओं की दुहाई देंगे, जिनके लिए उन्होंने बलि चढ़ाई है, परन्तु वे उन्हें संकट के समय में नहीं बचा सकते।

हे यहूदा, तुम्हारे देवता तुम्हारे नगरों के समान और यरूशलेम की सड़कों के समान बहुत हो गए हैं, और मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा। मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा। मैं तुम्हारी नहीं सुनूँगा।

मैं तुम्हारी बात नहीं सुनूँगा। यिर्मयाह अध्याय 7, श्लोक 16, तुम्हें इन लोगों के लिए प्रार्थना नहीं करनी है क्योंकि मैंने पहले ही उनका न्याय करने का फैसला कर लिया है। तुम्हारी प्रार्थनाओं से कोई फ़र्क नहीं पड़ने वाला है।

आपकी मध्यस्थता से उन्हें कोई मदद नहीं मिलने वाली है। यह एक चौंकाने वाली बात है क्योंकि मध्यस्थता एक भविष्यवक्ता के प्राथमिक कार्यों में से एक थी। अब, यदि यिर्मयाह ने यह नहीं सुना

है, तो अध्याय 11, श्लोक 14 में, टूटी हुई वाचा और वाचा के शापों के बारे में उपदेश के बाद, इसलिए इन लोगों के लिए प्रार्थना न करें या उनकी ओर से प्रार्थना न करें, क्योंकि जब वे अपने संकट के समय मुझे पुकारेंगे तो मैं नहीं सुनूंगा।

मैं उनके लिए आपकी प्रार्थनाएँ नहीं सुनने वाला हूँ। मैं उनकी प्रार्थनाएँ नहीं सुनने वाला हूँ। अगर उन्हें मदद चाहिए, अगर उन्हें कोई चाहिए जो उन्हें बचाए, तो उन्हें उन देवताओं को पुकारना होगा जिन पर उन्होंने भरोसा किया है और जिनके लिए उन्होंने वेदियाँ बनाई हैं।

यिर्मयाह अध्याय 14, पद 11, यहोवा ने मुझ से कहा है, इस प्रजा की भलाई के लिये प्रार्थना मत कर। यद्यपि वे उपवास करेंगे, तौभी मैं उनकी दोहाई न सुनूंगा। चाहे वे होमबलि और अन्नबलि चढ़ाएं, तौभी मैं उनको ग्रहण न करूंगा, वरन तलवार, महंगी और मरी से उनका अन्त कर डालूंगा।

यिर्मयाह, आपकी प्रार्थनाएँ और आपकी हिमायत उन्हें वाचा के श्रापों से मुक्ति नहीं दिलाएगी। यह उन्हें तलवार, अकाल, महामारी से नष्ट होने से नहीं रोक पाएगा। और इसलिए, यहां तीन अलग-अलग समय पर, प्रभु कहते हैं, आपको इन लोगों के लिए प्रार्थना नहीं करनी है।

और इसलिए, यिर्मयाह 11 से 20 में यिर्मयाह की प्रार्थनाएँ उस टूटी हुई वाचा का प्रतिबिंब हैं। यह सिर्फ ईश्वर और यहूदा के बीच टूटा हुआ रिश्ता नहीं है। प्रार्थना और भविष्यसूचक मध्यस्थता के बारे में ही कुछ टूटा हुआ है।

अब, यह इस तथ्य के प्रकाश में बेहद महत्वपूर्ण है, जैसा कि हमने पहले ही उल्लेख किया है, कि लोगों के लिए प्रार्थना करना और लोगों के लिए मध्यस्थता करना, विशेष रूप से धर्मत्याग या पाप के समय के दौरान, एक प्रमुख, प्रमुख भूमिका थी जो भगवान ने दी थी भविष्यवक्ता. हम मूसा के उदाहरण पर वापस जाते हैं। सुनहरे बछड़े की पूजा के बाद, लोगों द्वारा जासूसों की प्रतिक्रिया सुनने के बाद, सबसे पहले, निर्गमन 32, संख्या 14 में, भगवान कहते हैं कि वह लोगों को नष्ट करने के लिए तैयार हैं।

और मूसा उसके पास आता है और उसे उस वाचा के वादों की याद दिलाता है जो उसने की थी। मिस्रवासियों के बारे में क्या? आपकी प्रतिष्ठा के बारे में क्या? जब वे सुनेंगे कि तुमने उन लोगों को नष्ट कर दिया है जिन्हें तुमने मिस्र की गुलामी से छुड़ाया था, तो वे क्या सोचेंगे? और वहाँ यह कहा गया है कि प्रभु ने अपना मन बदल दिया। शमूएल की पुस्तक में, उस समय के दौरान जब इस्राएल ने एक राजा की माँग की, तो लोगों ने ऐसा करके एक अर्थ में ईश्वर को अस्वीकार कर दिया।

प्रभु ने उन्हें एक राजा प्रदान करने का वादा किया था, लेकिन यह उसकी शर्तों पर और उसके तरीके से होगा। उन्होंने यहोवा के विरुद्ध पाप किया था। और शमूएल के जीवन के अंत में, जब वह उन्हें वाचा का पालन करने की उनकी जिम्मेदारियों के लिए वापस बुला रहा है, तो वह एक भविष्यवक्ता के रूप में उनके लिए हस्तक्षेप करता है।

और एक अर्थ में, वह लोगों पर उस पाप के लिए परमेश्वर के फैसले को ठुकरा देता है जो उन्होंने राजा की माँग करके किया था। और इसलिए, लोगों के लिए सैमुअल की सार्वजनिक सेवकाई के अंत में क्या होता है। वे इस सभा के लिए एक साथ हैं, और प्रभु फसल के समय तूफान भेजते हैं जब बारिश की सामान्य रूप से उम्मीद नहीं होती है।

लोगों को संदेश मिला कि परमेश्वर उन्हें संदेश भेज रहा है कि वह उनसे नाराज़ है। इसलिए, ऐसा कहा जाता है कि शमूएल ने प्रभु को पुकारा, और प्रभु ने उस दिन गरज और बारिश भेजी, और सभी लोग प्रभु और शमूएल से बहुत डर गए। इसलिए, उसने प्रार्थना की, और परमेश्वर ने गरज और बारिश ला दी।

लेकिन फिर लोग श्लोक 19 में शमूएल से यह कहने जा रहे हैं। सभी लोगों ने शमूएल से कहा, अपने सेवकों के लिए अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करो, कि हम न मरें क्योंकि हमने अपने सभी पापों के साथ यह बुराई भी जोड़ ली है कि अपने लिए एक राजा मांग लिया है। उन्हें एहसास हुआ कि परमेश्वर क्रोधित था।

वे संभावित रूप से मर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर उन्हें मृत्युदंड देता है। कृपया परमेश्वर के क्रोध को दूर करें। श्लोक 20 में, शमूएल ने लोगों से कहा, डरो मत।

तुमने यह सब बुरा काम किया है। प्रभु के पीछे चलने से विमुख न हो, बल्कि पूरे मन से प्रभु की सेवा करो। व्यर्थ बातों से विमुख न हो जो लाभ नहीं पहुँचा सकतीं या उद्धार नहीं कर सकतीं क्योंकि वे व्यर्थ हैं।

क्योंकि यहोवा अपने बड़े नाम के कारण अपनी प्रजा को नहीं त्यागेगा, क्योंकि यहोवा तुम्हें अपनी प्रजा बनाना चाहता है। इसके अलावा, और यह यहाँ महत्वपूर्ण श्लोक है, जहाँ तक मेरा सवाल है, यह मुझसे दूर है कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बंद करके यहोवा के विरुद्ध पाप करूँ। इसलिए, इस विशेष स्थिति में, यह शमूएल की मध्यस्थता थी जिसने लोगों को तब बचाया जब उन्होंने राजा की माँग करके पाप किया था।

और शमूएल कहता है, मेरी चल रही भूमिका में, मेरे मंत्रालय के अंतिम दिनों में जब मैं एक भविष्यवक्ता के रूप में काम करना जारी रखता हूँ, तो यह मुझसे दूर की बात है कि मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करना बंद करके पाप करूँ। एक भविष्यवक्ता के लिए लोगों के लिए प्रार्थना न करना सबसे बड़ा पाप है। इसलिए, एक तरह से, यह एक अजीब बात है कि परमेश्वर यिर्मयाह के पास आकर कह रहा है, देखो, अपनी भविष्यवक्ता की भूमिका को पूरा मत करो।

इस लोगों के लिए हस्तक्षेप मत करो। हम मूसा और शमूएल के साथ जो देखते हैं उसके बिल्कुल विपरीत। और उस वाक्यांश को देखते हुए कि भगवान ने अपना मन बदल दिया, मैं वास्तव में विश्वास करता हूँ कि यदि मूसा प्रार्थना नहीं करता है, तो भगवान लोगों को नष्ट कर देता है।

यह महज एक रूपक नहीं है। यह बस इतना ही नहीं है, ठीक है, भगवान को सब पता था कि वह क्या करने जा रहा है, इसलिए वह बस मूसा को सबक सिखाने की कोशिश कर रहा है। मूसा की हिमायत प्रभावी ढंग से उस दिशा को बदल देती है जिसे ईश्वर लेने जा रहा है।

और इसलिए, एक अर्थ में, क्या यह एक रूपक है? हाँ, कुछ अर्थों में यह है। ईश्वर अपना मन उस तरह नहीं बदलता जैसा हम बदलते हैं। मैं अचानक बर्गर किंग के बजाय मैकडॉनल्ड्स जा रहा हूँ।

ईश्वर इस अर्थ में अपना मन नहीं बदलता कि भविष्य में क्या होने वाला है, इस बारे में उसके पास सीमित समझ या ज्ञान है, जैसा कि खुले ईश्वरवाद ने सिखाया है। लेकिन यह केवल एक रूपक होने से परे कह रहा है कि पुराने नियम में ईश्वर की प्रकृति के वास्तविक पहलुओं में से एक यह है कि वह अपने नबियों की प्रार्थनाओं के प्रति खुला था, और उसने अपने कार्यों के पाठ्यक्रम को इस आधार पर बदल दिया कि या तो नबी कैसे प्रार्थना करेगा या लोग कैसे प्रतिक्रिया देंगे। यह एक वास्तविक बात है।

परमेश्वर लोगों के साथ वास्तविक लेन-देन के रिश्ते में प्रवेश कर रहा है। और एक अर्थ में, हमें लगभग यह समझना होगा कि, हाँ, बाइबल में एक परमेश्वर है जो शाश्वत है और समय से परे है, और वह सभी चीजों को जानता है, लेकिन एक परमेश्वर ऐसा भी है जो समय में आता है, लोगों के साथ बातचीत करता है, वास्तविक इतिहास में और वास्तविक लेन-देन के रिश्तों में उनके साथ व्यवहार करता है। और इसलिए, परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं की प्रार्थनाओं ने अंततः, कई बार, परमेश्वर के कार्यों की दिशा बदल दी।

अब, बाइबल में कुछ अंश हैं, जैसे 1 शमूएल 15 या संख्या 23, जो कहते हैं कि ईश्वर अपना मन नहीं बदलता है। हम इन अनुच्छेदों के साथ क्या करते हैं जो कहते हैं कि ऐसे समय होते हैं जब भगवान अपना मन बदलते हैं? इसका उत्तर यह है कि यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है। ऐसे समय होते हैं जब परमेश्वर ने शपथ खाई होती है, जब परमेश्वर ने एक वाचा का वादा किया होता है जिससे वह पीछे नहीं हटेगा, या परमेश्वर ने निर्णय का एक वाक्य जारी किया होता है जिसके बारे में वह कहता है कि वह अपरिवर्तनीय है। उस समय, प्रभु अपना मन नहीं बदलते।

उनमें से एक समय ऐसा हुआ जब परमेश्वर ने शाऊल को राजा के रूप में अस्वीकार कर दिया। और सैमुअल, हालांकि, यह समझते हुए कि प्रभु कभी-कभी अपना मन बदल लेते हैं, पूरी रात प्रार्थना करते हैं। यदि ईश्वर बिल्कुल अपरिवर्तनीय है और अपना मन कभी नहीं बदलता है, तो वास्तव में उसके लिए ऐसा करने का कोई कारण नहीं है।

परन्तु जब यहोवा उसके पास लौटकर कहता है, इस विशेष मामले में, जब यहोवा ने एक अपरिवर्तनीय आदेश जारी किया है, जब यहोवा ने शपथ खाई है, तो वह अपना मन नहीं बदलता है। लेकिन अन्य समय में, जैसे निर्गमन 32 में मूसा के साथ स्थिति, या फिर मूसा की तरह, संख्या अध्याय 14 में इस्राएल के बच्चों के साथ, लोग उसके प्रति कैसी प्रतिक्रिया देते हैं, उसके आधार पर ईश्वर अपनी दिशा बदलने के लिए तैयार है। और भविष्यसूचक मध्यस्थता ने अक्सर परमेश्वर के फैसले को इस्राएल और यहूदा के लोगों से दूर कर दिया।

हमारे पास आमोस अध्याय 7, श्लोक 1 से 6 में शक्तिशाली और प्रभावी भविष्यसूचक मध्यस्थता का एक और उदाहरण है। आमोस एक टिड्डी झुंड का सपना देखता है जो इज़राइल की भूमि पर

आक्रमण करता है। याद रखें कि इस प्रकार की चीज़ों के विनाशकारी प्रभाव हो सकते हैं। यह टिड्डी दल इज़राइल की भूमि को लगभग पूरी तरह से खा जाता है और नष्ट कर देता है।

जब आमोस ने यह देखा, तो उसने कहा कि उसने प्रभु को पुकारा और कहा, हे प्रभु परमेश्वर, इस्राएल बहुत छोटा है। वे इससे कभी नहीं बच सकते। वह परमेश्वर के पास आया, परमेश्वर की दया के लिए विनती की, और परमेश्वर को अपनी प्रार्थना का उत्तर देने के लिए प्रेरणा दी।

और फिर से आश्चर्यजनक बात, वही बात जो हम मूसा के साथ देखते हैं, परमेश्वर ने दया दिखाई, परमेश्वर ने अपना मन बदल लिया। उसने न्याय नहीं किया। फिर आमोस ने एक ऐसी आग का दर्शन देखा जो पूरे देश में फैल गई।

और आमोस, वही प्रार्थना, वही याचिका परमेश्वर से, प्रभु, हे प्रभु परमेश्वर, इस्राएल बहुत छोटा है। वे इस तरह के न्याय का सामना नहीं कर सकते। यह आग जो देश में फैलकर उसे भस्म कर देगी।

भगवान अपना मन बदल लेते हैं और प्रार्थना नहीं भेजते हैं। तो, परमेश्वर का यिर्मयाह से कहना, इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो, उनके लिए मध्यस्थता मत करो, इसका क्या मतलब है, यह निर्णय का एक परिवर्तनीय आदेश नहीं है। हमने यिर्मयाह 1-25 की शुरुआत में समापन होते देखा है, लोगों को वापस लौटने के लिए बार-बार बुलाए जाने और ऐसा करने का अवसर देखा है।

फिर अध्याय 17 और 11-20 में, लौटने के लिए केवल तीन कॉल। फिर, 21-25, वे कॉल मूल रूप से गायब हो जाती हैं। पश्चाताप करने का अवसर बंद हो रहा है।

और इसका एक हिस्सा इस तथ्य में फिर से परिलक्षित होता है कि भगवान यिर्मयाह से कहते हैं, इन लोगों के लिए प्रार्थना करने में अपना समय बर्बाद मत करो। हम उस बिंदु से आगे निकल चुके हैं जहां मैं उस पर प्रतिक्रिया देने को तैयार हूं। अब, उस पिछले इतिहास को देखते हुए जिसके बारे में हमने अभी बात की है, मूसा और शमूएल की मध्यस्थता, वे भविष्यवक्ता मध्यस्थों के प्राथमिक उदाहरण हैं जिन्होंने लोगों को बचाया।

प्रभु ने यिर्मयाह से अध्याय 15, श्लोक 1 और 2 में यह कहा है, और अब मुझे लगता है कि ये श्लोक हमारे द्वारा अभी-अभी कही गई बातों के प्रकाश में अधिक अर्थपूर्ण हैं। प्रभु ने मुझसे कहा, यद्यपि मूसा और शमूएल मेरे सामने खड़े थे, फिर भी मेरा हृदय इन लोगों की ओर नहीं मुड़ा। उन्हें मेरे सामने से दूर कर दो और उन्हें जाने दो, और जब वे तुमसे पूछें, कि हम कहाँ जाएँ, तो तुम उनसे कहना, प्रभु यों कहता है, जो लोग महामारी के लिए हैं वे महामारी के लिए हैं, जो लोग तलवार के लिए हैं वे तलवार के लिए हैं, जो लोग अकाल के लिए हैं वे अकाल के लिए हैं, और जो लोग बंदी के लिए हैं वे बंदी के लिए हैं।

देखो, यदि मूसा और शमूएल घटनास्थल पर आ जाएँ, और यदि वे बीच-बचाव करें, तो मैं नहीं सुनूंगा। तो, हम यिर्मयाह के मंत्रालय को देख सकते हैं और कह सकते हैं, ठीक है, यिर्मयाह एक प्रकार का उप-पैगंबर है क्योंकि आपके पास इज़राइल के अतीत में ये महान भविष्यवक्ता थे जो भगवान के साथ जुड़े हुए थे, और जब लोगों ने गंभीर पाप किए थे तो भगवान ने उन्हें जवाब दिया

था, और यहोवा ने उन्हें क्षमा कर दिया, और यहोवा न्याय भेजने से पीछे हट गया। समस्या यिर्मयाह को भविष्यवक्ता के रूप में उपहार देने से नहीं है।

समस्या यह नहीं है कि यिर्मयाह परमेश्वर के साथ उतना घनिष्ठ नहीं है जितना मूसा और सैमुअल थे। यहोवा कहता है, देखो, यदि मूसा और शमूएल आज आसपास भी होते, तो भी इन लोगों के लिये बिनती न कर पाते। पश्चात्ताप के अवसर बन्द हो गये हैं।

और परमेश्वर अब कह रहा है, मध्यस्थता का समय, लोगों के लिए प्रार्थना करने का समय, वह समाप्त हो गया है, क्योंकि परमेश्वर उन्हें नष्ट करने के लिए तैयार है। और इसलिए, एक स्तर पर, हम देखते हैं कि ईश्वर भविष्यवक्ता से कह रहा है कि वह इस्राएल के लिए प्रार्थना न करें। और फिर, दूसरे स्तर पर, उसी संदर्भ में, और उसी अध्याय में, हमारे पास पैगंबर ईश्वर से प्रार्थना करते हुए हैं।

यिर्मयाह की स्वीकारोक्ति और विलाप दर्शाते हैं कि वह अब इस्राएल के लोगों के लिए हस्तक्षेप नहीं कर रहा है। और इसलिए, उन्हें बचाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बजाय, यिर्मयाह ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि वह उसके दुश्मनों को वध के लिए भेड़ की तरह मार डाले क्योंकि वे वाचा के विद्रोही हैं जिन्होंने ईश्वर की बात नहीं सुनी है। उन्होंने परमेश्वर के सामने अपनी मुट्ठी हिला दी है।

उन्होंने परमेश्वर और परमेश्वर के दूत का अपमान किया है। ऐसा सिर्फ इतना नहीं है कि उन्होंने यिर्मयाह के साथ दुर्व्यवहार किया है।

उन्होंने परमेश्वर के वचन को अस्वीकार कर दिया है। और वाचा के आधार पर, वे इस न्याय के पात्र हैं। और इसलिए, मूसा के दिनों में एक भविष्यवक्ता, शमूएल की भूमिका यह थी कि वह हस्तक्षेप करे कि परमेश्वर न्याय भेजने से नरम पड़ जाए।

शाप दर्शाते हैं कि अब भविष्यवक्ता की भूमिका, एक अर्थ में, लोगों के विरुद्ध प्रार्थना करना है। और इसलिए, वाचा का टूटना, भविष्यवक्ता की मध्यस्थता का हटाया जाना, इन स्वीकारोक्ति द्वारा दर्शाया जा रहा है, जहाँ मूसा और शमूएल की तरह लोगों को बचाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने के बजाय, यिर्मयाह, जिस निराशाजनक स्थिति में रह रहा है, वास्तव में लोगों का न्याय करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है। एंड्रयू शीड कहते हैं कि यिर्मयाह, एक अर्थ में, ईश्वर और इस्राएल के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य कर रहा है।

वह इस्राएल के लोगों के प्रति परमेश्वर के क्रोध और प्रकोप का प्रतिनिधित्व करता है, और वह परमेश्वर के प्रति इस्राएल के दर्द और पाप को दर्शाता है। और शीद कहते हैं, इस स्थिति में परमेश्वर और मनुष्य के बीच खड़ा होना एक दर्दनाक स्थिति है। इसलिए, यिर्मयाह के स्वीकारोक्ति, विलाप भविष्यवाणी की मध्यस्थता के टूटने को दर्शाते हैं।

दूसरे स्तर पर, यिर्मयाह की प्रार्थनाएँ, यिर्मयाह की मध्यस्थता, हालाँकि, यिर्मयाह के व्यक्तित्व के माध्यम से परमेश्वर द्वारा खुद को प्रतिबिंबित करने का एक तरीका भी है, जहाँ यिर्मयाह लोगों के लिए परमेश्वर का एक जीवित उदाहरण बन जाता है। जब यिर्मयाह प्रार्थना कर रहा है और अपने

दिल और अपने दर्द और अपने दुख और अपनी पीड़ा को उंडेल रहा है, तो एक स्तर पर, वह अपनी सभी कमज़ोरियों और कमज़ोरियों के साथ संघर्षरत इंसान का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे मैं निश्चित रूप से परमेश्वर के एक सेवक के रूप में समझ सकता हूँ। लेकिन दूसरे स्तर पर, वह इस्राएल के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर रहा है।

और इन प्रार्थनाओं में जो दर्द है, वह एक तरह से इस्राएल के लोगों के पापों के लिए परमेश्वर का दुःख है। और यह सिर्फ़ स्वीकारोक्ति में ही नहीं है। परमेश्वर के दर्द, नबी की पीड़ा और यिर्मयाह के तरीके का यह विचार... और यिर्मयाह सिर्फ़ एक संवेदनशील व्यक्ति नहीं है जिसे इन सबसे उबरने की ज़रूरत है।

वह ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे थरेपी या ऐसा कुछ करने की ज़रूरत है। एक तरह से, यिर्मयाह अपने आँसुओं के ज़रिए, ईश्वर के आँसुओं का प्रतिनिधित्व कर रहा है। और यह वास्तव में, विलाप करने से पहले ही शुरू हो जाता है।

मैं अध्याय 4, श्लोक 19 से 22 पर वापस जाना चाहता हूँ, और यिर्मयाह का काम इस्राएल के लिए परमेश्वर को व्यक्त करना या उसका प्रतिनिधित्व करना है। और इसीलिए यिर्मयाह को रोता हुआ भविष्यवक्ता कहा जाता है। फिर से, यह सिर्फ़ इसलिए नहीं है क्योंकि यिर्मयाह वास्तव में एक संवेदनशील व्यक्ति है, या यिर्मयाह एक ऐसा व्यक्ति है जो अपनी स्त्री पक्ष से संपर्क करने में सक्षम था, या यिर्मयाह किसी तरह का मनोवैज्ञानिक भविष्यवक्ता या भविष्यवक्ता का प्रोफ़ाइल है।

नबी का यह दुख खुद ईश्वर की पीड़ा और शोक की अभिव्यक्ति है। यिर्मयाह की पुस्तक पर टिप्पणीकारों ने जो बातें नोट की हैं, उनमें से एक यह है कि इन अंशों में जहाँ यिर्मयाह अपने दर्द, अपने रोने के बारे में बात कर रहा है, वह रोता हुआ नबी है। इन अंशों में हम जो बातें देखते हैं, उनमें से एक यह है कि कभी-कभी यह बताना मुश्किल होता है कि वास्तव में कौन बात कर रहा है। क्या यह ईश्वर है? या यह नबी है? क्या यह लोग हैं? या, किसी अर्थ में, यह तीनों चीज़ें हो सकती हैं? और इसलिए, इन दुख या पीड़ा वाले अंशों में से एक, जो हम पुस्तक में सबसे पहले देखते हैं, यिर्मयाह अध्याय 4, श्लोक 19 से 22 में वापस आता है।

यिर्मयाह के दुःख और पीड़ा को सुनो। यिर्मयाह कहता है, अब, यह यिर्मयाह के शब्दों की तरह लगता है। वह आक्रमणकारी सेना और हो रही सभी भयानक चीज़ों को देख रहा है, और वह इसके बारे में दुःखी और विलाप कर रहा है।

यह इस दर्शन पर भविष्यवक्ता की पीड़ा की तरह दिखता है, लेकिन श्लोक 22 को सुनें, और यह यह कहता है, और वहाँ, उस बिंदु पर, हमारे लिए यह कहना मुश्किल है, क्योंकि यह मेरे लोगों के बारे में बात कर रहा है, क्या यह भविष्यवक्ता है या है यह प्रभु? मुझे यकीन नहीं है कि, व्याख्यात्मक रूप से, हमें कोई विकल्प चुनने की ज़रूरत है। मुझे लगता है ये दोनों हैं। यिर्मयाह ने परमेश्वर के वचनों को इस अर्थ में निगल लिया है कि वह अपने व्यक्तित्व में परमेश्वर की अभिव्यक्ति बन गया है, और इसलिए हमें वास्तव में जानने की आवश्यकता नहीं है।

क्या यह यिर्मयाह है, या यह परमेश्वर है? यह दोनों है। अध्याय 9, श्लोक 1 से 3। फिर, यह एक और अभिव्यक्ति है इससे पहले कि हम यिर्मयाह के लोगों के विनाश पर उसके दर्द और दुःख की स्वीकारोक्ति तक पहुँचें। यिर्मयाह कहता है, हे! मेरे सिर पर जल और मेरी आंखों में आंसुओं का सोता होता, जिस से मैं अपनी प्रजा के मारे हुए लोगों के लिथे रात दिन रोता रहता।

और फिर, यह एक भविष्यवक्ता की मानवीय प्रतिक्रिया की तरह लगता है जो यहूदा के लोगों पर आने वाले विनाश, मृत्यु और विनाश के प्रति है। और फिर वह पद 2 में आगे कहता है, काश, मुझे रेगिस्तान में एक यात्री का ठिकाना मिल जाता, ताकि मैं अपने लोगों को छोड़कर उनसे दूर चला जाता। काश मैं इससे बच पाता, लेकिन इसके बजाय, मैं लगातार इस आपदा के कारण रोता रहता हूँ।

तो, क्या यह भविष्यवक्ता है, या यह प्रभु है? खैर, यह भविष्यवक्ता जैसा लगता है। लेकिन पद 3 में, हम यह पढ़ते हैं: वे अपनी जीभ को धनुष की तरह झुकाते हैं। देश में झूठ और सच्चाई नहीं, बल्कि ताकतवर हो गए हैं, क्योंकि वे बुराई से बुराई की ओर बढ़ते हैं, और वे मुझे नहीं जानते, प्रभु की यह वाणी है।

और इसलिए शायद यह यिर्मयाह है जो चाहता है कि वह इस्राएल पर आने वाले विनाश के कारण दिन-रात रो सके। लेकिन यह परमेश्वर का दुःख है। यह परमेश्वर की आवाज़ है जो पद 3 में उत्तर देती है। और एक अर्थ में, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि भविष्यवक्ता का रोना परमेश्वर का रोना बन जाता है।

भविष्यवक्ता की आवाज़ ईश्वर की आवाज़ में मिल जाती है। अध्याय 9 में आगे बढ़ने पर यह आगे-पीछे की बात भी व्यक्त होती है। और यहाँ हम पाते हैं कि प्रभु अपने क्रोध और अपने दुःख के बीच आगे-पीछे होता रहता है। उसका क्रोध और उसका दुःख।

आप जानते हैं, पुराने नियम में हमें कभी-कभी परमेश्वर के बारे में यह समझ मिलती है। वह बस क्रोध का परमेश्वर है। वह क्रोध का परमेश्वर है।

उसे विनाश करना पसंद है। उसे लोगों पर महामारी भेजना पसंद है। उसे बिजली के बोल्ट से उन्हें झकझोरना पसंद है।

यह भाग परमेश्वर के दर्द को प्रकट करता है जब वह देखता है कि उसके लोगों के साथ क्या हो रहा है। और जो भावनाएँ निकलती हैं, उन्हें सुनें।

सबसे पहले, श्लोक 9 में अत्यधिक क्रोध की भावना होगी। प्रभु कहते हैं, "क्या मैं इन बातों के लिए उन्हें दण्ड न दूँ, प्रभु की वाणी है? क्या मैं ऐसी जाति के द्वारा उनसे बदला न लूँ? बिलकुल लूँगा। याद रखें, वे एक विश्वासघाती वेश्या थीं। वे सैकड़ों-हजारों वर्षों से वाचा के प्रति विश्वासघाती रही थीं।

उन्होंने दूसरी मूर्तियों की पूजा करके परमेश्वर के साथ विश्वासघात किया था। वे एक ऐसी पत्नी की तरह थे जो अपने पति के प्रति विश्वासघात करती है। क्या मुझे ऐसी जाति से अपना बदला नहीं लेना चाहिए? बिलकुल।

लेकिन श्लोक 10 में जो दुख प्रकट होता है, उसे सुनिए। क्या यह परमेश्वर है, या भविष्यवक्ता? मैं पहाड़ों के लिए रोना-धोना और विलाप करना शुरू करूँगा और जंगल के चरागाहों के लिए विलाप करूँगा क्योंकि वे ऐसे उजाड़ दिए गए हैं कि कोई भी उनसे होकर नहीं गुज़रता और मवेशियों की रंभाहट सुनाई नहीं देती। हवा के पक्षी और जानवर दोनों ही उड़ गए हैं और चले गए हैं।

और यहाँ दुख है। बर्बादी को देखो। तबाही को देखो।

परमेश्वर के लोगों पर आए विनाश को देखिए। और ऐसा लगता है कि यह फिर से भविष्यवक्ता है जो उन लोगों में से एक है जो यह अनुभव कर रहे हैं कि क्या हो रहा है। लेकिन श्लोक 11 में, प्रभु बोल रहे हैं।

और प्रभु कहते हैं, मैं यरूशलेम को खण्डहरों का ढेर, गीदड़ों की एक परत बना दूँगा, और मैं यहूदा के शहर को उजाड़ बना दूँगा जहाँ कोई बसने वाला नहीं है। तो, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि परमेश्वर पद 9 में बोल रहा है। परमेश्वर क्रोध के शब्द बोल रहा है। परमेश्वर पद 11 में बोल रहा है।

परमेश्वर क्रोध के शब्द बोल रहा है। श्लोक 10 में दुःख का एक भाग है जहाँ वक्ता की स्पष्ट पहचान नहीं है। लेकिन हमें इसे किसी तरह परमेश्वर की आवाज़ के रूप में सुनना होगा, क्योंकि वह वही है जो पहले और बाद में दोनों बोल रहा है।

और एक विचार यह भी है कि परमेश्वर लोगों के पापों से क्रोधित है। प्रभु का भयंकर क्रोध तब तक शांत नहीं होगा जब तक कि वह अपनी सारी योजनाएँ पूरी नहीं कर लेता। लेकिन दूसरी तरफ, यरूशलेम की बेटी के विनाश पर परमेश्वर का दिल टूट गया।

उनकी बेटी, उनकी पत्नी, इन सभी चीजों का अनुभव कर रही हैं। हमने यहूदा के एक महिला के रूप में निर्णय की भाषा के बारे में बात की और कितनी बार कई नारीवादी आलोचक इसकी आलोचना करेंगे कि यह महिलाओं के बारे में उचित बातों की अभिव्यक्ति है जो हमारी संस्कृति और हमारे समय के लिए उचित नहीं है या कि भगवान को किसी तरह से एक अपमानजनक पति या एक दैवीय बलात्कारी के रूप में चित्रित किया जा रहा है। लेकिन मैं हमें याद दिलाना चाहता हूँ कि इसका उद्देश्य केवल अपना गुस्सा निकालना नहीं था।

यह एक धोखा खाए पति का दर्द बयां करने के लिए है। मुझे याद है जब मेरे सभी बच्चों को उनके ड्राइविंग लाइसेंस मिले थे। उन्हें जज के सामने पेश होना पड़ा और उन्हें ड्राइविंग के साथ आने वाले विशेषाधिकारों और जिम्मेदारियों की याद दिलाई गई।

न्यायाधीश ने सत्र को एक पुलिस अधिकारी को सौंप दिया जिसने हमारे सभी बच्चों को एक यातायात दुर्घटना का वीडियो दिखाया जिसने एक युवा व्यक्ति की जान ले ली। न्यायाधीश ने ऐसा इसलिए नहीं किया क्योंकि उसे बच्चों से नफरत थी और वह उन्हें कार दुर्घटना में देखना चाहता था। पुलिस अधिकारी ने ऐसा नहीं किया क्योंकि वह वर्षों से कानून प्रवर्तन में रहने से थक गया था।

न्यायाधीश और अधिकारी ने मेरे बच्चों के लिए चेतावनी के रूप में उन ज्वलंत चित्रों को चित्रित किया, और एक माता-पिता के रूप में, मैं वहां बैठा, और मैं आभारी था कि उन्होंने ऐसा किया। मैं भविष्यवक्ता यिर्मयाह के माध्यम से परमेश्वर को वही कार्य करते हुए देखता हूँ। धर्मशास्त्रियों ने कभी-कभी ईश्वर की अगम्यता के बारे में बात की है।

विचार यह है कि ईश्वर अपनी रचना से इतना अलग और इतना अलग है कि ईश्वर किसी अन्य प्राणी या उनकी प्रतिक्रिया या उनके प्रति उनकी प्रतिक्रिया के आधार पर दर्द या खुशी का अनुभव नहीं करता है। और मैं इस कारण को समझता हूँ कि धर्मशास्त्री ईश्वर की अपरिवर्तनीयता, उसकी अपरिवर्तनीयता, उसकी पूर्णतः अन्यता पर जोर देना चाहते हैं, लेकिन ईश्वर की वह छवि यिर्मयाह की पुस्तक के साथ काम नहीं करती है। ईश्वर निश्चित रूप से एक ईश्वर है जो अपने लोगों के दर्द पर दुःखी होता है।

टेरेस फ्रेथीम ने ईश्वर की पीड़ा के बारे में बात की है, और मुझे लगता है कि यह यिर्मयाह की पुस्तक में ईश्वर का बहुत सटीक चित्रण है। परमेश्वर भविष्यवक्ता यिर्मयाह के साथ रोता है। वह कोई ईश्वर नहीं है जो निश्चलता से स्वर्ग में बैठा है और कह रहा है, मैं इसे पूरा करने जा रहा हूँ, मैं अपना सर्वोच्च उद्देश्य पूरा करने जा रहा हूँ, और अंततः मैं इससे खुश हूँ।

प्रभु, जब वह लोगों को ऐसे चुनाव करते देखता है जो उसे पता है कि उनके लिए विनाश लेकर आएंगे, जब उसके लोगों के साथ उसका रिश्ता टूट जाता है, तो वह इस पर दुखी होता है। और इसलिए एक अपरिवर्तनीय ईश्वर का विचार, चाहे हम किसी भी धार्मिक कारण से इसका उपयोग ईश्वर की अपरिवर्तनीयता की रक्षा करने के लिए करना चाहें, पुराने नियम के ईश्वर का सटीक चित्रण नहीं है। यिर्मयाह अध्याय 12, श्लोक 7 से 11, फिर से, इन सब में ईश्वर की भावना और ईश्वर के दर्द और ईश्वर के क्रोध के बीच आगे-पीछे।

अध्याय 12, श्लोक 7, प्रभु कहते हैं, मैं ने अपना घर त्याग दिया, मैं ने अपना निज भाग छोड़ दिया, मैं ने दे दिया, और सुनो वह किस प्रकार मेरी प्राण प्रिया को उसके शत्रुओं के हाथ में सौंप देता है। भगवान ने ऐसा नहीं किया क्योंकि वह बस उन्हें नष्ट करना चाहते थे, और यह तथ्य कि वह उन्हें मेरी आत्मा के प्रिय और अपनी विरासत, अपनी सबसे कीमती संपत्ति के रूप में वर्णित करते हैं, यह दर्शाता है कि इससे भगवान को कितनी गहरी पीड़ा हुई। भविष्यवक्ता होशे, होशे अध्याय 11, श्लोक 8 और 9, यहोवा कहता है, मैं एप्रैम को कैसे त्याग दूँ? चाहे उन्होंने कुछ भी किया हो, मैं उनसे प्यार करना बंद नहीं कर सकता।

मैं उन्हें कैसे त्याग सकता हूँ? इसलिए, मैं परमेश्वर का पूरा क्रोध और क्रोध अपने लोगों पर नहीं उतारूंगा, और मैं उन्हें पूरी तरह से नष्ट और नष्ट नहीं करूंगा। परन्तु प्रभु कहते हैं, मैं ने अपनी

विरासत को त्याग दिया है, मैं ने अपने प्राण के प्रिय को त्याग दिया है, और इससे परमेश्वर को गहरी पीड़ा होती है। भगवान की अद्भुत छवि।

इस प्रकाश में परमेश्वर के बारे में सोचिए। लेकिन फिर परमेश्वर पद 8 में वापस आता है और कहता है, मेरी विरासत मेरे लिए जंगल में शेर की तरह हो गई है। उसने मेरे खिलाफ़ आवाज़ उठाई है।

इसलिए, मैं उससे नफरत करता हूँ। ठीक है, तो चलिए इसे एक साथ रखते हैं। मेरी आत्मा की प्रियतमा, मैं उससे नफरत करता हूँ।

कभी-कभी, हम आज यह अभिव्यक्ति इस्तेमाल करते हैं कि परमेश्वर पापी से प्रेम करता है और पाप से घृणा करता है। और मैं समझता हूँ कि हम ऐसा क्यों करते हैं। लेकिन कभी-कभी, पुराना नियम लगभग यह विचार व्यक्त करने वाला होता है कि परमेश्वर सिर्फ़ पाप से घृणा नहीं करता।

वह पापी से भी नफरत करता है। और यह एक डरावनी बात है। लेकिन यह भगवान का क्रोध है।

यह परमेश्वर का क्रोध है। और यह पुराने नियम का हिस्सा है जिसे हमें सुनने की ज़रूरत है। श्लोक 9, क्या मेरी विरासत मेरे लिए लकड़बग्घे की माँद की तरह है? क्या शिकारी पक्षी उसके चारों ओर से उसे नष्ट कर रहे हैं? जाओ और सभी जंगली जानवरों को इकट्ठा करो और उन्हें खाने के लिए ले आओ।

बहुत से चरवाहों ने मेरी दाख की बारी को नष्ट कर दिया है। उन्होंने मेरे भाग को रौंद डाला है। उन्होंने मेरे मनभावने भाग को उजाड़ जंगल बना दिया है।

और इसलिए, यहाँ प्रभु अपने क्रोध में कह रहे हैं, मैं यहूदा के विरुद्ध जंगली जानवरों को लाने जा रहा हूँ, और मैं उन जंगली जानवरों से उन्हें नष्ट करवा दूँगा। लेकिन फिर अगले श्लोक में, प्रभु इस तथ्य पर दुःखी हैं कि इस्राएल के नेता ही वे हैं जिन्होंने इस सुंदर दाख की बारी को नष्ट कर दिया है। और प्रभु ने इसे लगाया और इसे आशीर्वाद दिया और इसे ऐसी जगह पर रखा जहाँ यह पूरी तरह से फलदायी होने वाला था।

लेकिन यह नेता हैं और प्रभु इस पर दुखी हैं। श्लोक 11, उन्होंने इसे उजाड़ कर दिया है, उजाड़ यह मेरे लिए विलाप करता है। इसलिए, भूमि विलाप कर रही है, और परमेश्वर उस रोने को सुनता है, और यह उसके दिल को छूता है, और यह उसे उसी समय दुखी करता है जब वह अंगूर के बाग को जंगली जानवरों को खाने और इसे खाने के लिए दे रहा है।

तब इस शोक के बीच में, प्रभु कहते हैं, रेगिस्तान में सभी नंगी ऊंचाइयों पर, विनाशक आ गए हैं। यहोवा की तलवार एक छोर से दूसरे छोर तक भस्म करती है। किसी भी प्राणी को शांति नहीं है।

उन्होंने जंगली बीज बोया है और कांटे काटे हैं। उन्होंने खुद को थका लिया है लेकिन उन्हें कोई फायदा नहीं हुआ। यहोवा के भड़के हुए क्रोध के कारण वे अपनी उपज से लज्जित होंगे।

और इसलिए फिर से, हमारे पास यह मार्ग है: वह ईश्वर कौन सा है? क्या आप भावुक प्रेम के देवता हैं, और क्या इज़राइल आपकी आत्मा का प्रिय है, या क्या यह आपके निर्णय का लक्ष्य है जिससे आप नफरत करते हैं और जिसे आप अपने उग्र क्रोध में भस्म करना चाहते हैं? इन दोनों बातों का उत्तर है. और इसलिए, जब यिर्मयाह अपनी स्वीकारोक्ति के लिए प्रार्थना कर रहा है और कम से कम कुछ स्थानों पर जहां यिर्मयाह इस बात पर शोक मना रहा है कि क्या हो रहा है और वह क्या अनुभव कर रहा है और क्या कर रहा है, वह सिर्फ अपने मंत्रालय की कठिनाइयों को व्यक्त नहीं कर रहा है। वह इस टूटी हुई और टूटी हुई वाचा के बीच जो कुछ हुआ है, उस पर ईश्वर के हृदय में दुःख को प्रतिबिंबित कर रहा है, जहाँ ईश्वर का अपने लोगों के साथ संबंध टूट गया है।

अध्याय 14, श्लोक 17 से 18। फिर से, हम इस संदर्भ के बीच में एक टूटी हुई वाचा से निपट रहे हैं। हम इस संदर्भ के बीच में हैं जहां हमारे पास भविष्यवक्ता यिर्मयाह की ओर से स्वीकारोक्ति और विलाप हैं।

अब परमेश्वर यिर्मयाह से, लोगों से यह विशेष रूप से कहने जा रहा है। तुम उनसे यह वचन कहना: मेरी आँखों से दिन-रात आँसू बहते रहें, और वे कभी न रुकें। क्योंकि मेरे लोगों की कुंवारी बेटी एक बड़े घाव और एक गंभीर आघात से चकनाचूर हो गई है।

अगर मैं मैदान में जाऊँ, तो देखो, वहाँ तलवार से छेदे हुए लोग हैं। और अगर मैं शहर में प्रवेश करूँ, तो देखो, वहाँ अकाल है, क्योंकि नबी और पुजारी दोनों देश भर में अपना व्यापार करते हैं और उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है। ठीक है, यहाँ इस अंश के बारे में महत्वपूर्ण बात बताई गई है।

प्रभु यिर्मयाह से कहते हैं, तुम उनसे यह वचन कहो, मेरी आँखों से आँसू बह निकलें। ठीक है, तो इस बारे में जो बात महत्वपूर्ण है वह यह है कि भविष्यवक्ता का रोना वास्तव में परमेश्वर का रहस्योद्घाटन है। परमेश्वर कहते हैं, मैं चाहता हूँ कि तुम रोओ और यह इस विशेष स्थिति में उनके लिए मेरा वचन है।

तो फिर, यह सिर्फ एक इंसान के तौर पर यिर्मयाह नहीं है जो कहता है कि यह एक भयानक स्थिति है। यह सिर्फ यिर्मयाह की मानवीय भावनाएँ नहीं हैं। यह सिर्फ इज़राइल के लोगों के तौर पर यिर्मयाह नहीं है जो सोचता है, वाह, देखो हमारा देश किस दौर से गुज़रने जा रहा है।

यह सिर्फ यिर्मयाह का शोक मनाने की बात नहीं है, बल्कि प्रभु का उससे कहना है, यिर्मयाह, इसे सहन करो, यह प्रभु का वचन है। चलिए आगे बढ़ते हैं। प्रभु यिर्मयाह से कहते हैं, अपने भविष्यसूचक वचन के हिस्से के रूप में, सिर्फ यह मत कहो, प्रभु कहते हैं, उनके सामने खड़े होकर यह भी कहो, प्रभु इस प्रकार रोते हैं।

एंद्र्यू शीड ने यह टिप्पणी की है। उनका कहना है कि अगर परमेश्वर का इरादा और परमेश्वर की योजना सिर्फ लोगों को वह संदेश बताना था जिसे उन्हें सुनना था, तो परमेश्वर स्वर्ग में दिव्य सलाह की दूरी से उस संदेश को संप्रेषित कर सकता था। लेकिन परमेश्वर उस संदेश को एक व्यक्ति, एक साधन के माध्यम से संप्रेषित करना चाहता था।

और यिर्मयाह का रोना देखकर, हे, कि मेरा सिर आंसुओं का सोता हो गया, कि मैं दिन रात रोता रहूँ। वह सिर्फ एक अति संवेदनशील भविष्यवक्ता नहीं है। अर्थात् परमेश्वर स्वयं अपने लोगों के विनाश पर शोक मना रहा है।

तो केवल स्वीकारोक्ति यिर्मयाह की व्यक्तिगत कठिनाई की अभिव्यक्ति से परे, स्वीकारोक्ति ईश्वर और इज़राइल के बीच की वाचा के टूटने के बारे में है। अनुबंध टूट गया है। विवाह को अपूरणीय क्षति हुई है।

प्रार्थना ही बंद हो रही है। लोगों के लिए प्रार्थना करने के बजाय, यिर्मयाह को उनके खिलाफ प्रार्थना करने और भगवान से उनका न्याय करने के लिए कहने के लिए बुलाया गया है। अब, एक भविष्यवक्ता के रूप में, प्रभु आपके पास आते हैं।

प्रभु तुमसे कहते हैं, इस लोगों के लिये प्रार्थना मत करो। आप उस पर क्या प्रतिक्रिया देंगे? यदि आप किसी चर्च के पादरी हैं और एक दिन आप ईश्वर का संदेश सुनते हैं, तो अपने झुंड के लिए प्रार्थना न करें। मुझे लगता है कि जितना आप भगवान ने जो कहा है उसे सुनना चाहते हैं, आप शायद तब भी प्रार्थना करेंगे जब आप अपनी मदद नहीं कर सकते।

और यिर्मयाह, बहुत वास्तविक तरीके से, अध्याय 14 में ऐसा करता है, क्योंकि हमारे पास प्रार्थना की टूटन है, न केवल भगवान और भविष्यवक्ता के बीच, बल्कि हमारे पास भगवान और लोगों के बीच प्रार्थना की टूटन है। और अध्याय 14 में, लोग अपने पापों की स्वीकारोक्ति के साथ भगवान के पास आते हैं। और यहाँ लोग यही कह रहे हैं, वे ईश्वर से प्रार्थना में अपना हृदय उँडेलने जा रहे हैं।

याद रखें कि यिर्मयाह ही वह है जो लोगों के लिए ये प्रार्थनाएँ व्यक्त कर रहा है। तो, एक तरह से, भगवान ने कहा है, यिर्मयाह, इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो। उनके लिए हस्तक्षेप मत करो।

मैं वैसे भी जवाब नहीं देने वाला। यिर्मयाह की प्रार्थना लोगों के लिए पाप की स्वीकारोक्ति है। वह वही कर रहा है जो परमेश्वर ने उसे न करने को कहा था।

और प्रार्थना में यही कहा गया है। यद्यपि हमारे अधर्म हमारे विरुद्ध गवाही देते हैं, फिर भी हे प्रभु, अपने नाम के निमित्त कार्य करो। क्योंकि हमारे पीछे हटने के कारण बहुत हैं, हमारे जूते, हमारे भटकने के कारण बहुत हैं।

यही बात पैगंबर ने अध्याय 2 और 3 में उनके बारे में कही थी। हमने तुम्हारे खिलाफ पाप किया है। मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूँ। क्या यह एक अच्छा कबूलनामा लगता है? हाँ, यह बहुत अच्छा लगता है।

इसमें सभी सही तत्व मौजूद हैं। विनम्रता का उचित माप और वह सब। मेरा मतलब है, यही एक स्वीकारोक्ति है।

फिर वे परमेश्वर से कहते हैं, हे इस्राएल की आशा, संकट के समय में उसका उद्धारकर्ता। तुम देश में अजनबी की तरह क्यों हो, एक यात्री की तरह जो रात भर रुकने के लिए अलग हो जाता है? तुम एक भ्रमित व्यक्ति की तरह क्यों हो, एक शक्तिशाली योद्धा की तरह जो हमें बचा नहीं सकता? हे प्रभु, तुम अपने लोगों से क्यों दूर हो? फिर भी, हे प्रभु, तुम हमारे बीच में हो, और हम तुम्हारे नाम से पुकारे जाते हैं, हमें मत छोड़ो। क्या यह एक अच्छा स्वीकारोक्ति है? बिल्कुल।

वे अपने पाप को स्वीकार कर रहे हैं। वे अपनी ज़रूरत और परमेश्वर पर अपनी निर्भरता को स्वीकार कर रहे हैं। वास्तव में, यह वही प्रार्थना है जो यिर्मयाह ने उन्हें अध्याय 3, श्लोक 22 से 25 में बताई है।

यही वह है जो आपको प्रार्थना करने की आवश्यकता है। प्रभु वहाँ कहते हैं, हे अविश्वासी, लौट आओ, और मैं तुम्हारी अविश्वास को ठीक कर दूँगा। और लोग कहते हैं, हे परमेश्वर, देख, हम तेरे पास आते हैं, क्योंकि तू ही हमारा परमेश्वर यहोवा है।

सचमुच पहाड़ियाँ एक भ्रम हैं, पहाड़ों में होने वाले व्यभिचार। सचमुच हमारे परमेश्वर यहोवा में ही इस्राएल का उद्धार है। यह अंश उस समय की कल्पना कर रहा है जब वे अंततः अपनी मूर्तियों का त्याग करने जा रहे हैं।

वे आखिरकार सभी पुरानी प्रथाओं को त्यागने जा रहे हैं। और वे स्वीकारोक्ति में परमेश्वर की ओर मुड़ने जा रहे हैं। और हम अध्याय 14 में इसे देखते हैं और कहते हैं, ठीक है, शायद हम यहाँ हैं।

शायद हम आखिरकार इस जगह पर आ गए हैं। और बाकी किताब में जो भी न्याय, ये दूसरी बातें होने वाली हैं, वो ज़रूरी नहीं हैं। वे भगवान से बिल्कुल सही शब्द कह रहे हैं।

वे परमेश्वर से वे शब्द नहीं कह रहे हैं जो उन्होंने तब कहे थे जब प्रभु ने उन्हें अध्याय 2 में न्यायालय में दोषी ठहराया था। हमने कोई पाप नहीं किया है। हमने बाल देवताओं का अनुसरण नहीं किया है। हम निर्दोष हैं।

खैर, हम समझ नहीं पा रहे हैं कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं। साथ ही वे कह रहे थे, हे प्रभु, हम अपनी सहायता नहीं कर सकते। हमें इन देवताओं के पीछे भागना होगा।

हम पेड़ से कहते हैं, तुम हमारे पिता हो। हम पत्थर से कहते हैं, तुम हमारी माँ हो। वे इस तरह की बातें नहीं कह रहे हैं।

वे सही शब्द कह रहे हैं। और इसलिए, हमें लगता है कि भगवान स्पष्ट रूप से उनकी प्रार्थना का उत्तर देंगे, है ना? भगवान स्पष्ट रूप से कहने जा रहे हैं, हे, बढ़िया, हम राष्ट्रीय पुनरुत्थान का समय बिता रहे हैं। फैसला टल गया है।

यह यिर्मयाह की पुस्तक का अंत है। परन्तु नहीं, पद 10 ऐसा कहता है, प्रभु इन लोगों के विषय में ऐसा कहता है। उन्हें इस तरह घूमना बहुत पसंद है।

उन्होंने अपने पैर रोके नहीं। इसलिए, भगवान उन्हें स्वीकार नहीं करते। अब वह उनके अधर्म को स्मरण करेगा, और उनके पापों का दण्ड देगा।

यिर्मयाह, इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो। यिर्मयाह, प्रभु, मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। मुझे उनके लिए प्रार्थना करनी है।

लोग आपके पास आ रहे हैं और अपने पापों को स्वीकार कर रहे हैं। प्रभु कहते हैं, यिर्मयाह, मैं नहीं सुनूंगा क्योंकि वे केवल शब्द हैं। और उन्होंने अपने पांव रोके नहीं।

वे वास्तव में घूम नहीं रहे हैं। और यहाँ एक चौंकाने वाला बयान है, प्रभु कहते हैं, मैं उनके अधर्म को याद करने जा रहा हूँ। यदि आप यिर्मयाह 31 में नई वाचा के मार्ग के बारे में सोचते हैं, जब प्रभु कहते हैं, मैं अब उनके पाप को याद नहीं रखूंगा, और हम अभी उस बिंदु पर नहीं हैं।

क्योंकि लोगों को बदला नहीं गया है, उनका रूपांतरण नहीं किया गया है। मेरा मतलब है, महान प्रार्थना, महान शब्द, रूढ़िवादी।

इसे प्रार्थना की किसी भी गोपनीय पुस्तक में शामिल किया जा सकता है। लेकिन वास्तविक ठोस पश्चाताप के बिना शब्दों का कोई मतलब नहीं है। इसलिए, यदि यह पर्याप्त नहीं है, तो भविष्यवक्ता उसी अध्याय में एक और स्वीकारोक्ति के साथ लोगों की ओर से फिर से प्रभु के पास आता है।

इस मार्ग के ठीक बाद, प्रभु ने कहा, मेरी आंखों से दिन रात आंसू बहते रहें, और वे न रुकें, क्योंकि मेरी प्रजा की कुंवारी बेटी चकनाचूर हो गई है। लोग फिर से भगवान के पास आते हैं। और फिर, भविष्यवक्ता, इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो, यिर्मयाह।

भगवान, मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। मैं वैसे भी उनके लिए प्रार्थना करने जा रहा हूँ। और यहाँ वह प्रार्थना है जो वहाँ पाई जाती है।

क्या तुमने यहूदा को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया है? क्या तुम्हारा मन सिख्योन से घृणा करता है? तू ने हम को ऐसा क्यों मारा कि हमारा कोई भला न हो सका? हमने शांति की तलाश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। हम उपचार के समय की प्रतीक्षा कर रहे हैं, लेकिन देखो, आतंक। अब, यहीं, ऐसा लगभग लगता है कि हमारी पीड़ा एक तरह से अन्यायपूर्ण है।

हमें समझ नहीं आ रहा कि आप क्या कर रहे हैं। लेकिन इसके बाद वे क्या कहते हैं, सुनिए. पद 20, हे प्रभु, हम अपनी दुष्टता और अपने पूर्वजों के अधर्म को स्वीकार करते हैं।

वे अब यह नहीं कह रहे हैं कि पिता खट्टे अंगूर खाते हैं और बच्चों के दाँत खट्टे हो जाते हैं। हम अपने पिताओं के समान ही पापी हैं। वे इसे स्वीकार करते हैं।

हमने तुम्हारे विरुद्ध पाप किया है। अपने नाम के कारण हमें तिरस्कृत न करें। हे यरूशलेम, अपने गौरवशाली सिंहासन का अपमान मत करो।

और फिर वे यह कहते हैं: याद रखो और हमारे साथ अपनी वाचा मत तोड़ो। अत्यधिक विडम्बनापूर्ण, है ना? अध्याय 11 अनुभाग का परिचय देता है। तुमने वाचा तोड़ दी है।

वाचा के श्राप आ रहे हैं। अध्याय 14, हे प्रभु, हमारे साथ अपनी वाचा मत तोड़ो। यह एक अच्छी प्रार्थना है।

फिर, यह हमारी धार्मिक प्रार्थना पुस्तकों में काम कर सकता है, लेकिन यही वह समय है जब भगवान अध्याय 15 में जवाब देते हैं, हालांकि मूसा और सैमुअल मेरे सामने खड़े थे, फिर भी मेरा दिल इन लोगों की ओर नहीं गया। उन्हें मेरे साम्हने से दूर कर दे, और वे मरी और विपत्ति और उन सब वस्तुओं का अनुभव करेंगे जिन्हें यहोवा ने उन पर डालने की धमकी दी थी। वाचा के श्राप प्रभाव में आ रहे हैं।

महान स्वीकारोक्ति, प्रार्थना के महान शब्द। प्रभु कोई उत्तर नहीं देंगे। यिर्मयाह, इन लोगों के लिए प्रार्थना मत करो।

यहाँ प्रभु जो करने जा रहे हैं उसे जारी रखेंगे। यहाँ उस महान स्वीकारोक्ति की प्रतिक्रिया है। यहोवा की यह वाणी है, कि मैं उन पर चार प्रकार के नाश करनेवाले नियुक्त करूंगा, अर्थात् मारने के लिये तलवार, फाड़ डालने के लिये कुत्ते, और फाड़ डालने के लिये आकाश के पक्षी, और फाड़ डालने के लिये पृथ्वी के पशु।

और हिजकियाह के पुत्र यहूदा के राजा मनश्शे ने जो कुछ यरूशलेम में किया, उसके कारण मैं उनको पृथ्वी भर के राज्य राज्य में भय उत्पन्न करूंगा, और जिस दण्ड की उसने कुछ समय पहिले धमकी दी थी, उसे अब उस ने टाल दिया है। वापस खेल में। प्रभु उनकी प्रार्थना नहीं सुन रहे हैं। और भगवान, फिर से, आने वाले छंदों में इस सब के दुःख के बारे में बात करने जा रहे हैं, और हम इस अंश को देखकर समाप्त करेंगे।

अध्याय 15, श्लोक 5. हे यरूशलेम, तुझ पर कौन दया करेगा? कौन तेरे लिए शोक मनाएगा? कौन तेरे कुशल-क्षेम के बारे में पूछने के लिए मुड़ेगा? यहोवा की यह वाणी है, तूने मुझे अस्वीकार कर दिया है। तू पीछे हटती चली गई है। इसलिए, मैंने तेरे विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाया है और तुझे नष्ट कर दिया है।

मैं अपने पापों से मुक्त होने से थक गया हूँ। मैंने देश के फाटकों पर उन्हें फटकने वाले कांटे से फटक दिया है। मैंने उन्हें वंचित कर दिया है, और मैंने अपने लोगों को नष्ट कर दिया है।

आप इस क्रोधित परमेश्वर को देख सकते हैं, लेकिन मैं उस प्रश्न की विडम्बना भी देख सकता हूँ। हे यरूशलेम, तुम पर कौन दया करेगा? या कौन तुम्हारे लिए शोक मनाएगा? इसका उत्तर यह है कि प्रभु स्वयं ऐसा करेंगे। परमेश्वर पद 8 में कहते हैं, मैंने उनकी विधवाओं की संख्या समुद्र की रेत से भी अधिक कर दी है।

लोगों ने कहा था, हम से जो वाचा बान्धी है उसे मत तोड़ो। इब्राहीम की वाचा में, परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को समुद्र के किनारे की रेत के समान असंख्य बनाने का वादा किया था। अब, इब्राहीम की वाचा के उलट, परमेश्वर उनकी विधवाओं को समुद्र के किनारे की रेत से भी अधिक बना रहा है।

अनुबंध टूट गया है। वह, जो सात साल की है, कमज़ोर हो गई है। वह बेहोश हो गई है।

उसका पुत्र दिन निकलते ही चला गया, और वह लज्जित और बदनाम हुई। और उन में से जो बचे हुए हैं, उनको मैं उनके शत्रुओं के साम्हने तलवार से मार डालूंगा, यहोवा की यह वाणी है। यिर्मयाह की स्वीकारोक्ति केवल एक संघर्षरत भविष्यवक्ता की प्रार्थनाएँ नहीं हैं।

वे, एक अर्थ में, हमें दुःखी भगवान को देखने में मदद करते हैं। और परमेश्वर के हमारे धर्मशास्त्र में, यिर्मयाह 11 से 20 हमें बहुत शक्तिशाली चीज़ की याद दिलाता है। वह ईश्वर अविश्वसनीय जुनून और भावना का ईश्वर है।

एक ऐसा परमेश्वर जो पाप पर क्रोध और गुस्से का अनुभव करता है और उसे महसूस करता है। और हमें परमेश्वर के उस पहलू की उपेक्षा या उससे बचना या उसे दूर करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। लेकिन प्रेम और दया और करुणा और अनुग्रह का परमेश्वर जो अपने लोगों पर न्याय लाते समय भी दुःखी होता है।

यिर्मयाह के बयानों के ज़रिए हमें न सिर्फ़ नबी के चरित्र के बारे में जानकारी मिलती है। बल्कि हमें परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव के बारे में भी जानकारी मिलती है।

यह डॉ. गैरी येट्स हैं जो यिर्मयाह की पुस्तक पढ़ा रहे हैं। यह सत्र 15 है, यिर्मयाह के इकबालिया बयान, भाग 2, ईश्वर की करुणा।